परीक्षा

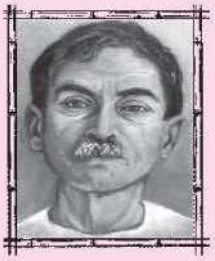

लेखक परिचय – हिन्दी साहित्य के उपन्यास-सम्राट एवं अप्रतिम कथाकार मुंशी प्रेमचन्द का जन्म वाराणसी के निकट लमही नामक ग्राम में 31 जुलाई सन् 1880 ई. में हुआ था। प्रेमचन्द जी का वास्तविक नाम धनपतराय था; उन्हें नबाबराय के नाम से भी जाना जाता था। उनके पिता का नाम अजायबराय तथा माता का नाम आनन्दीदेवी था।

मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप एक स्कूल में अध्यापक हो गए। इसके बाद स्वाध्यायी रूप में स्नातक-परीक्षा (बी.ए.) उत्तीर्ण करके शिक्षा विभाग में डिप्टी इंस्पेक्टर हो गए; किन्तु अपने स्वतंत्र एवं क्रान्तिकारी विचारों के कारण उन्होंने शासकीय सेवा का परित्याग करना पड़ा। फलतः आजीवन आर्थिक संघर्षों का सामना करते हुए भी समाजोपयोगी उत्कृष्ट साहित्य-सृजन में संलग्न रहे। इसी बीच आपने 'मर्यादा' पत्र और 'माधुरी' मासिक पत्रिका का संपादन कार्य भी किया। जीवन-संघर्ष को झेलते हुए सर्जनात्मकता का यह अथक योद्धा 56 वर्ष की आयु में सन् 1936 ई. में दिव्य-ज्योति में विलीन हो गया।

प्रमुख रचनाएँ - प्रेमचन्द ने कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, जीवनियाँ आदि सभी मुख्य गद्य विधाओं पर अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया।

कहानियाँ - 'मानसरोवर' तथा 'गुप्तधन' में आपकी तीन सौ से अधिक कहानियाँ संकलित हैं। पूस की रात, कफन, ईदगाह, पंचपरमेश्वर, परीक्षा, बूढ़ी काकी, बड़े घर की बेटी, सुजान भगत आदि प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

उपन्यास – वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, गबन, कर्मभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गोदान और मंगलसूत्र (अपूर्ण)।

नाटक – कर्बला, संग्राम और प्रेम की वेदी।

निबंध संग्रह – स्वराज्य के फायदे, कुछ विचार, साहित्य का उद्देश्य।

जीवनियाँ – महात्मा शेखसादी, दुर्गादास, कलम-तलवार और त्याग।

प्रेमचंद गरीबों के मसीहा थे। उनकी कहानियों में दीन-दुखियों, महिलाओं, ग्रामीणों तथा समाज के अन्य तिरस्कृत तथा उपेक्षित लोगों के प्रति जन-जागरण तथा जन-चेतना लाने का भाव दिखलाई देता है। वे साहित्य को मनोरंजन का साधन न मानकर जीवन की सच्चाइयों को प्रकाशित करने का पथ मानते हैं। प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं के लिए हिन्दी की खड़ी बोली के सरल, सहज, बोधगम्य एवं व्यवहारिक रूप को अपनाया है। उन्होंने भाषा में आकर्षण तथा सहज प्रवाह लाने के लिए अवसरानुकूल उर्दू शब्दों का प्रयोग किया है। उनकी भाषा में मुहावरे तथा सूक्तियाँ भी बहुतायत में मिलती है। उन्होंने परिचयात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, विश्लेषणात्मक तथा अभिनयात्मक शैलियों को अपनाया है। उनकी शैली हिन्दी-उर्दू भाषा की मिश्रित शैली है।

हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द उपन्यास सम्राट के नाम से जाने जाते हैं। वे युग प्रवर्तक कहानीकार होने के साथ-साथ नए कहानीकारों में भी अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। आधुनिक साहित्य जगत में कहानी-कला को अक्षुण्ण बनाए रखने वाले कथाकारों में वे अग्रणी हैं। उपन्यासों की भाँति उनकी कहानियों में भी आदर्शोन्मुख-यथार्थवादी प्रवृत्ति मिलती है।

केन्द्रीय भाव

प्रस्तुत कहानी देवगढ़ रियासत में दीवान पद के उम्मीदवार के चयन की प्रक्रिया से सम्बन्धित है। देवगढ़ के दीवान सुजान सिंह स्वयं पद-मुक्त होना चाहते हैं, इसलिए वे नए दीवान की नियुक्ति विषयक विज्ञप्ति को प्रकाशित कराते हैं। इस विज्ञप्ति में योग्यता विषयक शर्तों में कर्त्तव्यबोध ही विचारणीय था। अनेक आवेदक इस पद हेतु आवेदन करते हैं। इनकी जीवन शैली और इनकी कर्त्तव्य परायणता का परीक्षण एक महीने तक चलता है। सब अपने-अपने कौशल और आचार-व्यवहार को उत्कृष्ट बनाने का प्रयत्न करते हैं-एक दिन हॉकी मैच का आयोजन होता है, सब थक जाते हैं। तभी शाम के घिरते अंधेरे में एक बैलगाड़ी कीचड़ में फँस जाती है, सभी खिलाड़ी इस दृश्य को नजर अंदाज कर जाते हैं, किन्तु उनमें से एक खिलाड़ी गाड़ीवान की सहायता के लिए

तत्पर हो जाता है। इसी व्यक्ति का दीवान पद पर चयन होता है। गाड़ीवान के रूप में स्वयं सुजान सिंह थे। कहानी के चरित्रों में दीवान सुजान सिंह और पंडित जानकीनाथ का ही चरित्र उभर कर आता है। महाराज की पारखी दृष्टि और पंडित जानकीनाथ का मानवीय आचरण दोनों चरित्रों को महत्वपूर्ण बनाने वाले गुण हैं और इस चयन हेतु उन्होंने व्यक्ति के साहस, आत्मबल और उदारता जैसे गुणों को ही मानदण्ड माना है। राज्य-व्यवस्था का संचालन कर्त्ता इन गुणों से परिपूर्ण होकर ही राज्य के गरीबों के दुख के प्रति दयावान होकर अपने दृढ़ संकल्प से उसको दूर करने का प्रयत्न कर सकता है। कहानी का स्वर आदर्शवादी है, व्यक्ति आचरण में निहित पर दुख कतरता, सहयोग भावना और सेवा परायणता जैसे गुणों को भी कहानी में उभारा गया है। कहानी का दृश्य-विधान जीवंत है-भाषा सरल और सुबोध है।

परीक्षा

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए तो परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से विनय की कि दीनबन्धु ! दास ने श्रीमान् की सेवा चालीस साल तक की, अब मेरी अवस्था भी ढल गई, राज-काज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल-चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग लगे। सारी जिन्दगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।

राजा साहब अपने अनुभवशील नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब ने न माना, तो हारकर उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, पर शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान आप ही को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला कि देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की जरूरत है। जो सज्जन अपने को इस पद के योग्य समझें वे वर्तमान सरदार सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह जरूरी नहीं है कि ग्रेजुएट हों, मगर हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है, मंदाग्नि के मरीज को यहाँ तक कष्ट उठाने की कोई जरूरत नहीं। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन-सहन, आचार-विचार की देखभाल की जाएगी। विद्या का कम, परन्तु कर्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे, वे इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में तहलका मचा दिया। ऐसा ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं? केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए-नए और रंग-बिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से उम्मीदवारों का एक मेला-सा उतरता। कोई पंजाब से चला आता था, कोई मद्रास से, कोई नई फैशन का प्रेमी, कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ। पण्डितों और मौलवियों को भी अपने-अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला। बेचारे सनद के नाम रोया करते थे, यहाँ उनकी कोई जरूरत नहीं थी। रंगीन एमामे, चोगे और नाना प्रकार के अंगरखे और कंटोप देवगढ़ में अपनी सज-धज दिखाने लगे। लेकिन सबसे विशेष संख्या ग्रेजुएटों की थी, क्योंकि सनद की कैद न होने पर भी सनद से परदा तो ढँका रहता है।

सरदार सुजानसिंह ने इन महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। लोग अपने-अपने कमरों में बैठे हुए दिन गिना करते थे। हर एक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते हुए ऊषा का दर्शन करते थे। मि. 'ब' को हुक्का पीने की लत थी, आजकल बहुत रात गए किवाड़ बन्द करके अँधेरे में सिगार पीते थे। मि. स, द और ज से उनके घरों पर नौकरों के नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। महाशय 'क' नास्तिक थे, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मन्दिर के पुजारी को पदच्युत

हो जाने की शंका लगी रहती थी। मि. 'ल' को किताब से घृणा थी, परन्तु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रन्थ देखने-पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम होता था। शर्मा जी घड़ी रात से ही वेद-मन्त्र पढ़ने लगते थे और मौलवी साहब को नमाज और तलावत के सिवा और कोई काम न था। लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है।

लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है।

एक दिन नए फैशनवालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर एक विद्या है। इसे क्यों छिपा रखें। सम्भव है, कुछ हाथों की सफाई ही काम कर जाए। चलिए तय हो गया, फील्ड बन गई, खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ्तर के अप्रेंटिस की तरह ठोकरें खाने लगी।

रियासत देवगढ़ में यह खेल बिल्कुल निराली बात थी। पढ़े-लिखे भलेमानुस लोग शतरंज जैसे गम्भीर खेल खेलते थे। दौड़-कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे।

खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे के लोग जब गेंद को लेकर तेजी से उड़ते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन दूसरी ओर से खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे कि मानो लोहे की दीवार हो।

संध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने से तर हो गए। खून की गर्मी आँख और चेहरे से झलक रही थी। हाँफते-हाँफते बेदम हो गए, लेकिन हार-जीत का निर्णय न हो सका।

अँधेरा हो गया था। इस मैदान से जरा दूर हटकर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से चलकर आना पड़ता था। खेल अभी बन्द ही हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए हुए नाले में आया। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ उसकी चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहियों को हाथ से ढकेलता, लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमजोर। गाड़ी ऊपर को न चढ़ती और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। किसान बार-बार जोर लगाता और बार-बार झुँझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी को अकेले छोड़कर कहीं जा भी नहीं सकता। बड़ी आपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच में खिलाड़ी हाथों में डण्डे लिए घूमते-घामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ सहमी हुई आँखों से देखा, परन्तु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा मगर बन्द आँखों से, जिनमें सहानुभूति न थी। उनमें स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और वात्सल्य का नाम भी न था।

लेकिन उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य था जिसके हृदय में दया थी और साहस था। आज हॉकी खेलते हुए उसके पैरों में चोट लग गई थी। लंगड़ाता हुआ धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात् उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। ठिठक गया। उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गईं। डंडा एक किनारे रख दिया। कोट उतार डाला और किसान के पास जाकर बोला-मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?

किसान ने देखा एक गठे हुए बदन का लम्बा आदमी सामने खड़ा है। झुककर बोला-हुजूर मैं आपसे कैसे कहूँ? युवक ने कहा-मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हो। अच्छा, तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहियों को ढकेलता हूँ अभी गाड़ी ऊपर चढ़ जाती है।

किसान गाड़ी पर जा बैठा। युवक ने पहिए को जोर लगाकर उकसाया। कीचड़ बहुत ज्यादा थी। वह घुटने तक जमीन में गड़ गया, लेकिन हिम्मत न हारी। उसने फिर जोर किया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला, हिम्मत बँध गई, उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार जोर किया तो गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बोला–महाराज, आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात मुझे यहाँ बैठना पड़ता।

युवक ने हँसकर कहा–अब मुझे कुछ इनाम देते हो? किसान ने गम्भीर भाव से कहा–नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।

युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, क्या यह सुजानसिंह तो नहीं हैं? आवाज मिलती है, चेहरा–मोहरा भी वही। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कराकर बोला–गहरे पानी में बैठने से ही मोती मिलता है।

निदान, महीना पूरा हुआ। चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल ही से अपनी किस्मतों का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम, आज किसके नसीब जागेंगे! न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपादृष्टि होगी।

संध्या समय राजा साहब का दरबार सजाया गया। शहर के रईस और धनाढ्य लोग, राज्य के कर्मचारी और दरबारी तथा दीवानी के उम्मीदवारों का समूह, सब रंग–बिरंगी सज–धज बनाए दरबार में आ बिराजे! उम्मीदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

जब सरदार सुजानसिंह ने खड़े होकर कहा–मेरे दीवानी के उम्मीदार महाशयो! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है, उसके लिए मुझे क्षमा कीजिए। इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी जिसके हृदय में दया हो और साथ–साथ आत्मबल। हृदय वह जो उदार हो, आत्मबल वह जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमें ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुण वाले संसार में कम हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं, उन तक हमारी पहुँच नहीं है। मैं रियासत के पण्डित जानकीनाथ–सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।

रियासत के कर्मचारियों और रईसों ने जानकीनाथ की तरफ देखा। उम्मीदवार दल की आँखें उधर उठीं, मगर उन आँखों में सत्कार था, इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार साहब ने फिर फरमाया, आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं जख्मी होकर एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर चढ़ा दे उसके हृदय में साहस, आत्मबल और उदारता का वास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए, परन्तु दया और धर्म से कभी न हटेगा।

◆◆◆

अभ्यास

बोध प्रश्न -

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. सुजानसिंह कौन थे?
2. देश के प्रसिद्ध पत्रों में विज्ञापन क्यों निकाला गया?
3. रियासत देवगढ़ में आए हुए उम्मीदवारों ने कौन सा खेल खेलने की योजना बनाई?
4. किसान की गाड़ी कहाँ फँस गई थी?
5. 'अच्छा, तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहियों को ढकेलता हूँ...' यह बात किसने किससे कही?
6. गाड़ी पर किसान के वेश में कौन था?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. राजा दीवान सुजान सिंह का आदर क्यों करते थे.
2. बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा क्या देख रहा था?
3. खिलाड़ियों ने निराश और असफल किसान को किस भाव से देखा?
4. परेशान किसान की सहायता किसने की?
5. युवक को किसान की तरफ देखकर क्या सन्देह हुआ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. 'जिससे बात कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम होता था' इस उक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. दीवान सुजानसिंह ने अपने उत्तराधिकारी का चयन किस प्रकार किया?
3. देवगढ़ रियासत का 'दीवान' पद के लिए जानकीनाथ का चयन क्यों किया गया?
4. 'परीक्षा' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
5. निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिए –
   इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी ..... उन तक हमारी पहुँच नहीं है

भाषा अध्ययन -

1. निम्नलिखित पदों का समास-विग्रह कर समास का नाम लिखिए –
   नीति कुशल, धर्मनिष्ठ, आत्मबली, वेद-मंत्र, कृपादृष्टि
2. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद करते हुए संधि का नाम लिखिए –
   परीक्षा, मन्दाग्नि, सहानुभूति, निराशा
3. निम्नलिखित शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए –
   1. जो धर्म को न मानता हो।
   2. जो धर्म को मानता हो।
   3. उपासना करने वाला।
   4. पुत्र के प्रति स्नेह का भाव।
   5. पूजा करने वाला।

योग्यता विस्तार

1. कहानी को संवाद रूप में परिवर्तित कर कक्षा में अभिनय कीजिए।
2. आज का युवा आधुनिक चमक-धमक में पड़कर मानवीय मूल्यों से दूर होता जा रहा है। कक्षा में इस विषय पर परिचर्चा का आयोजन कीजिए।
3. 'युवाशक्ति और अनुशासन' विषय पर संक्षिप्त निबंध लिखिए।
4. आप मुसीबत में फँसे व्यक्ति की मदद कैसे करते हैं, किसी घटना का वर्णन साथियों के साथ बाँटिए।

शब्दार्थ

विनय = प्रार्थना। **तहलका** = हलचल। **सनद** = प्रमाण पत्र। **नेकनामी** = अच्छे कार्य के लिए मिलने वाला यश। **आत्मबल** = आत्मा का बल (साहस)। **शिखर** = चोटी, शीर्ष। **संकल्प** = निश्चय। **चित्त** = हृदय। **नास्तिक** = ईश्वर को न मानने वाले। **कीर्ति** = प्रसिद्धि, प्रशंसा।